बाबा झैंगड़ शाह जी

बाबा रज्जाल शाह जी के दो शिष्य थे, बाबा झैंगड़ शाह जी व बाबा कंगाल शाह जी। बाबा झैंगड़ शाह जी ने अपने त्याग, तपस्या, परोपकार आदि गुणों से बाबा रज्जाल शाह जी का मन जीत लिया था। बाबा झैंगड़ शाह जी सच्चे शब्दों में निःस्पृह, निर्द्वन्द्व, निष्परिग्रह, सत्यसार, धर्मनीतिप्रवीण दिव्य संत थे। संसार में रहते हुए भी उन्हें कोई मोह न था। कठोर तपस्या और अविरल साधना से झैंगड़ शाह जी के शरीर से अग्नि का सा तेज झलकता था। जब वे मस्ती में कीर्तन करते थे तो ऐसा प्रतीत होता था मानों वे अपने भीतर एकत्रित भक्ति, ज्ञान-विज्ञान व शान्ति को संसार में लुटा देना चाहते हों। वे सफेद रंग की खद्दर की धोती को कटि तक बांधे रहते थे। उनका चौड़ा वक्षस्थल नग्न रहता था। उनका दिव्य शरीर संसार की कामनाओं को पूरा करने वाला एक कल्पवृक्ष था। गले में व बाजुबन्द में रुद्राक्ष की माला सुशोभित रहती थी। हाथ में रुद्राक्ष की माला से सिंह की खाल के आसन पर बैठकर तप करते हुए वे साक्षात् भगवान शंकर दिखाई देते थे।

वे हर प्राणी में हरि के रूप को देखते थे। बाबा झैंगड़ शाह जी की अलौकिकता के कारण लोगों के जीवन में जबरदस्त परिवर्तन आने लगा। लोगों में नाम निष्ठा, श्रद्धा, विश्वास और आध्यात्मिक आस्था बढ़ने लगी। बाबा झैंगड़ शाह जी जैसा शिष्य पाकर बाबा रज्जाल शाह जी अपने को धन्य मानने लगे। बाबा रज्जाल शाह जी के पास एक आसन था जिससे वे कहीं भी अ जा सकते थे। उन्होंने वह आसन अपने परम शिष्य बाबा झैंगड़ शाह जी के दे दिया।

बाबा रज्जाल शाह जी के दूसरे शिष्य बाबा कंगाल शाह जी बाबा झैंगड़ शाह जी की बढ़ती हुई लोकप्रियता को देखकर ईर्ष्या करने लगे। जब उन्हें पता चला कि बाबा रज्जाल शाह जी ने अपना चमत्कारी आसन भी बाबा झैंगड़ शाह जी को दे दिया है तब तो उनकी क्रोधाग्नि और भी भड़क उठी। उन्होंने जिस किसी प्रकार से वह आसन बाबा झैंगड़ शाह जी से हथिया लिया। बाबा झैंगड़ शाह जी तो साक्षात् भोलेनाथ थे। उन्हें न तो वर्तमान की चिन्ता थी और न भविष्य का खतरा। वे संग्रह के कट्टर विरोधी थे। उनके मन में किसी प्रकार का लोभ-लालच व छल-कपट न था। उन्होंने सुथरे शाह जी की वाणी को अपनी गाँठ में बाँध रखा था -

मनकपटी, मनलालची, मन पापी मन चौड़।
सुथरा मन कीनै बिना मिटे न मन की दौड़।

अतः जब बाबा रज्जाल शाह जी को पता चला कि बाबा कंगाल शाह ने उनका आसन बाबा झैंगड़ शाह जी से हथिया लिया है तो उन्हें बहुत बुरा लगा। उन्होंने क्रोध में आकर बाबा कंगाल शाह जी को शाप दिया कि वह कंगाल का कंगाल ही रहेगा। उन्होंने उसे लाहौर छोड़ जाने को भी कहा। बाबा कंगाल शाह जी वहाँ से काबुल कंधार की ओर चले गए। आज भी वहाँ उनकी समाधि है जिसे मुस्लिम व हिन्दू लोग पूजते हैं। बाबा कंगाल

शाह जी का घराना वहीं समाप्त हो गया, आगे न बढ़ पाया। बाबा रज्जाल शाह जी ने जहाँ बाबा कंगाल शाह जी को शाप दिया वहीं बाबा झैंगड़ शाह जी को वरदान भी दिया कि तुम्हारी ख्याति पूरे देश में होगी व सवा लाख डण्डा बजेगा। इस प्रकार बाबा झैंगड़ शाह जी की अपनी अलौकिक शक्तियों के कारण व गुरु कृपा से सवा लाख शिष्य बने। इनके शिष्य कन्याकुमारी से लेकर काश्मीर तक तथा काबुल कन्धार में भी फैले। बाबा झैंगड़ शाह जी ने साढ़े बारह घराने बनाए। बाबा कंगाल शाह जी का घराना क्योंकि आगे न चल सका इसलिए वह आधा ही रह गया।

समाधि बाबा झैंगड़ शाह जी

१९४७ में भारत विभाजन के पश्चात् उनकी समाधि को लाहौर से लाकर दिल्ली के यमुना बाजार स्थित मन्दिर में स्थापित किया गया। जो भक्त इन्हें सच्चे हृदय से पुकारता है तथा इनकी समाधि पर श्रद्धा के पुष्प अर्पित करता है बाबा जी आज भी उनकी रक्षा करते हैं।